श्रीमती रीता का जन्म 04 मई, 1974 को चन्द्रावल गांव, दिल्ली के एक किसान परिवार में हुआ।

आपने बी.ए. एम.ए. व एम. फिल. की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की व दिल्ली विश्वविद्यालय से आप पी-एच.डी. के लिए शोधरत हैं। एम.फिल. में शैक्षिक योग्यता के आधार पर आपको छात्रवृति भी प्राप्त हो चुकी हैं।

आप वर्तमान समय में मैत्रेयी महाविद्यालय, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

आप अनेक सेमिनारों में समय-समय पर भाग लेती रहती हैं। देश के प्रतिष्ठित पत्र/पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

₹ 400/-

ISBN: 978-93-81615-35-5

9789381615355

प्रगतिशील प्रकाशन
एन-3/25, प्रथम तल, डी.के. रोड, मोहन गार्डन
उत्तम नगर, नई दिल्ली-59 संपर्क : 996877749

उदय प्रकाश की कहानियों में समाज

रीता

उदय प्रकाश की कहानियों में
समाज

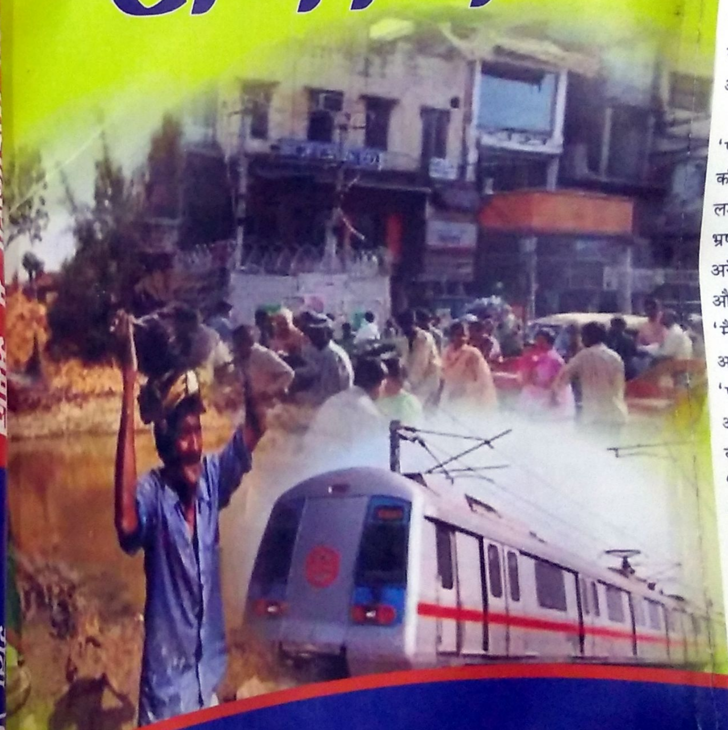

रीता

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी का बहुत महत्व है। प्रारंभ से ही कहानी कही-सुनी जाती रही है। दादी-नानी की मौखिक कहानियों और परियों की कहानियों के साथ कहानी का उदय हुआ। कहानी में युगबोध की क्षमता अधिक है। उदय प्रकाश आज के लोकप्रिय एवं सशक्त कहानीकार हैं। उनकी कहानियां आज के समय और यथार्थ की सटीक भाषिक अभिव्यक्तियां हैं।

'मोहनदास' कहानी मोहनदास की 'पहचान' उसके 'अस्तित्व' के लिए संघर्ष की अंतहीन कहानी है। 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी में जातिवाद, ब्राह्मणवाद, भ्रष्टाचार, ग्लोबल पूंजी और प्रशासन की अनैतिकता के कई महत्वपूर्ण विमर्श अंजली और राहुल की प्रेमकथा के साथ गूंथे हुए हैं। 'मैंगोसिल' कहानी भूमंडलीकरण और असंतुलित विकास के सच को उकेरती है। 'पालगोमरा का स्कूटर' कहानी उत्तर-आधुनिक समय और उसमें एक गरीब हिन्दी कवि के 'मिसफिट' होने की दास्तान है। 'टेपचू' उस व्यक्ति की कहानी है जो कभी नहीं मरता क्योंकि वह एक आदमी नहीं वर्ग है। उनकी कहानियों के पात्रों में जीवन के प्रति ललक और जिजीविषा दिखाई देती है।

अपनी कहानियों में उदय प्रकाश समाज के बहुरंगी चित्रों को उकेरते हैं।

उदय प्रकाश की कहानियों में समाज

रीता

प्रगतिशील प्रकाशन
नई दिल्ली (भारत)

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत है। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशक का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

ISBN : 978-93-81615-35-5

प्रकाशकः
प्रगतिशील प्रकाशन
N-3/25A, डी.के. रोड, मोहन गार्डन, उत्तम नगर
नई दिल्ली–110059 दूरभाषः011–25358642
E-mail : satyampub_2006@yahoo.com

उदय प्रकाश की कहानियों में समाज

मूल्य : 400.00
प्रथम संस्करण : 2012
© सुरक्षित

भारत में प्रकाशित
'प्रगतिशील प्रकाशन' के लिए प्रकाशित। कॉन्वेक्स पब्लिशिंग सोल्यूशन ब्यूरो, नई दिल्ली–110059 द्वारा लेजर टाईपसेटिंग तथा विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

समर्पण

ममतामयी माँ किरणबाला जी

एवं

पिता स्व. श्री धर्मसिंह जी को

समर्पित!

अनुक्रमणिका

भूमिका 6

1. साहित्य और समाज का अन्तः संबंध 9
2. उदय प्रकाश : साहित्यिक परिचय 28
3. उदय प्रकाश की कहानी कला 35
4. टेपचू : जो कभी नही मरता 44
5. पॉल गोमरा का स्कूटर : उत्तर आधुनिक समय और गरीब कवि पॉल गोमरा 49
6. मोहनदास : मोहनदास की अपनी पहचान के लिए संघर्ष की अंतहीन कहानी 55
7. पीली छतरी वाली लड़की : प्रेमकथा में गूंथा भारतीय समाज 62
8. मैंगोसिल : भूमंडलीकरण और विकास का सच 72

उपसंहार 79

उदय प्रकाश से छोटी-सी मुलाकात 83

संदर्भ-ग्रन्थ सूची 86

भूमिका

कहानियों का इतिहास बहुत पुराना है। दादी नानी की मौखिक कहानियों और परियों की कहानियों के साथ कहानी का उदय हुआ। कहानी व्यक्ति और समाज से बहुत निकट से जुड़ी विधा है। कहानी में युगबोध की क्षमता अन्य गध विधाओं की अपेक्षा अधिक है। हम सभी बचपन से ही कहानियां सुनते हुए बड़े होते हैं। बच्चों को जीवन-मूल्य और नैतिक शिक्षा देने के लिए कहानियों को ही चुना जाता रहा है। कहानी में जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार होती है कि वह पाठक पर अपना समग्र प्रभाव छोड़ सके। कहानी के आरम्भिक सूत्र प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं। विशेषकर पंचतंत्र, हितोपदेश, महाभारत, जातक कथाएं आदि में। आज कहानी मानव-समाज की समग्र संवेदना और सम्भावना के साथ विधमान है।

साहित्य और समाज का बहुत घनिष्ठ संबंध होता है। जीवन का यथार्थ ही कलात्मकता के साथ साहित्य में अभिव्यक्त होता है। समाज में साहित्य और साहित्यकार की सामाजिक भूमिका होती है, जो रचनात्मक और उद्धेश्यपूर्ण होती है। साहित्यकार केवल यथार्थ का वर्णन नहीं करता अपितु उसकी पुर्नरचना भी करता है। साहित्यकार अलग-अलग सांस्कृतिक विशेषताओं व भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के बावजूद सार्वभौमिक मनुष्य के हर्ष, पीड़ा, शोक, संग्राम को व्यक्त करता है।

उदयप्रकाश आज के बहुचर्चित और सशक्त कहानीकार है। उनकी

कहानियां आज के समय और यथार्थ की सटीक भाषिक अभिव्यक्तियां है। वे मध्यवर्ग की जमीन पर खड़े होकर अपनी संवेदना के विस्तार में व्यापक समाज के दुःख दर्द को समेट लेते हैं। समाज का सूरते-हाल इनकी कहानियों में बहुत रोचक और यर्थाथवादी ढंग से परिलक्षित होता है। वे आम आदमी की हाशियाकृत स्थिति को महसूस करते हैं और उसे खुलकर कहने का साहस रखते हैं। उदय किस्सागोई की परम्परा को पुनः जीवित करते हुए सामाजिक परिवर्तनों की अपनी समझ और रचनात्मक प्रतिभा के मेल से अपना कहानी संसार निर्मित करते हैं।

उदय प्रकाश की कहानियों में कुछ खटकता भी है जैसे- सशक्त स्त्री पात्रों का अभाव। इन कहानियों में स्त्रियां सहायक पात्रों के रूप में उपस्थित है मुख्य भूमिका में नही। उदय प्रकाश की कलम से निकलने वाले सशक्त स्त्री-पात्रों एवं उनके बहुस्तरीय संघर्ष को उकेरने वाली कहानियों की पाठकों को प्रतीक्षा है। कई बार कहानियों में आए विस्तृत ब्यौरे भी अनावश्यक प्रतीत होते हैं। कहानियों में निराशा का स्वर भी कुछ ज्यादा लगता है।

उदय प्रकाश की कहानियों में पर्याप्त वैविध्य है। 'टेपचू' उस व्यक्ति की कहानी है जो कभी नहीं मरता; क्योंकि टेपचू एक आदमी नही वर्ग है, (सर्वहारा वर्ग) जो कभी नहीं मर सकता। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी उत्तर-आधुनिक समय और उसमें एक गरीब हिन्दी कवि के 'मिसफिट' होने की दास्तान है। 'मोहनदास' कहानी मोहनदास की पहचान उसके अस्तित्व के लिए संघर्ष की अंतहीन कहानी है। 'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी में जातिवाद, ब्राह्मणवाद, भ्रष्टाचार, ग्लोबल पूंजी और प्रशासन की अनैतिकता के कई महत्त्वपूर्ण विमर्श अंजली और राहुल की प्रेमकथा के साथ गूंथे हुए है। 'मैगोसिल' कहानी भूमंडलीकरण और असंतुलित विकास के सच को उकेरती है। जिसमें विकास के एकतरफा ढांचे से उत्पन्न विसंगत यथार्थ को दिखाया गया है।

उदय प्रकाश की तमाम कहानियां अपने समय की कड़वी सच्चाइयों के दबाव के अन्तर्गत लिखी गयी है। यह सभी कहानियां समकालीन

भारतीय समाज के सारे अत्याचारों और जीवन संघर्षों का दस्तावेज़ बनकर उपस्थित होती है। इनकी कहानियों के टेपचू, पॉल गोमरा, मोहनदास, चंद्रकात, शोभा, सूरी कस्तूरी के संघर्ष आपस में मिलकर इक्कीसवीं सदी के बहिष्कृत तबके के संघर्ष बन जाते हैं। इन सभी पात्रों में जीवन के प्रति ललक और जिजीविषा दिखाई देती है। मोहनदास में मलाङ्गी माई, पीली छतरी वाली लड़की में गांधी और चैतन्य, मैंगोसिल में निज़ामुद्दीन औलिया और खुसरों की उपस्थिति पात्रों में आस्था व विश्वास पैदा करती है। ये सभी पात्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हैं इस मायने में ये कहानियां अलग-अलग न होकर एक ही कहानी है।

मैं उदय प्रकाश जी का विशेष रूप से आभार प्रकट करती हूं कि उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया। पुस्तक से संबंधित सुझाव व सहयोग के लिए मैं अपनी सखी गीता की आभारी हूं। परिवार के सहयोग के बिना तो यह पुस्तक प्रकाशित होना संभव ही नहीं था। मैं अपनी मां श्रीमति किरणबाला जी के स्नेहाशीर्वाद के लिए उनका आभार प्रकट करती हूं और इस पुस्तक को उन्हें समर्पित करती हूं। मेरा मनोबल बढ़ाने और इस पुस्तक के लिए निरंतर प्रेरित करने के लिए मैं अपने जीवनसाथी सुनील कुमार जी की आभारी हूं। यदि उनका सहयोग मुझे न मिलता तो यह पुस्तक प्रकाशित नहीं हो पाती। अपने छोटे भाई वीरु, बहनों मंजु, आशा और भाभियों रति, कविता के निरन्तर प्रोत्साहन, सहयोग और उत्साहवर्द्धन के लिए आभार प्रकट करने हेतु मेरे पास शब्द नहीं सचमुच अपनों के सहयोग के बिना यह कार्य पूर्ण होना बहुत मुश्किल था। और अंत में मेरे बेटे यश और भतीजी कोमल का सहयोग तो अविस्मरणीय है।